**सीमांत चेतना मंच के असम राज्य सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के संबोधन का प्रारूप**

| | | |
|---|---|---|
| दिनांक : 27 जुलाई 2024, शनिवार | समय : 10.00 AM | स्थान : बेंगतल कॉलेज, चिरांग |

- राष्ट्रीय स्वयं संघ (RSS) के अखिल भारतीय कार्यकारी सदस्य **श्री उल्लास कुलकर्णी जी,**
- सीमा जागरण मंच के राष्ट्रीय संयोजक **श्री मुरलीधर जी,**
- बीटीआर के मुख्य कार्यकारी सदस्य **श्री प्रमोद बोड़ो जी,**
- सीमांत चेतना मंच, पूर्वोत्तर की अध्यक्ष **डॉ. प्रतिमा नियोगी जी,**
- संगठन की असम राज्य समिति की अध्यक्ष **डॉ. बिनिता भागवती जी,**
- बेंगतोल कॉलेज के प्राचार्य **श्री रंजीत कुमार नार्जरी जी,**
- संगठन के अन्य अधिकारी एवं कार्यकर्ता गण,
- उपस्थित विशिष्ट अतिथि गण,
- मीडिया के हमारे मित्रों
- देवियो और सज्जनों

1. आप सभी का मेरा नमस्कार,

सीमांत चेतना मंच, पूर्वोत्तर के असम राज्य सम्मेलन में आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है। आपके इस वार्षिक सम्मेलन में मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं संगठन को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

साथ ही आप सभी को देश के 78वें स्वतंत्रता दिवस की बधाई देता हूं।

2. आज से 19 दिन बाद देश की आजादी के 77 वर्ष पूरे हो जाएंगे। 15 अगस्त को हम फिर भारत की स्वाधीनता का जश्न मनाएंगे। लेकिन यह दिवस देश की आजादी की खुशी मनाने के साथ-साथ हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद करने का अवसर भी होता है।

यह दिवस लोगों में राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना को जागृत करता है और राष्ट्र के निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।

3. मुझे कहते हुए गर्व हो रहा है कि सीमांत चेतना मंच 1985 में अपने गठन के बाद से लोगों में, विशेषकर युवाओं में देशभक्ति की भावना जगाने और राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को बढ़ावा देने के लिए समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ काम कर रहा है।

हालांकि इस संगठन का मुख्य उद्देश्य देश के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों के बीच शिक्षा, सशक्तिकरण, एकता और जागरूकता के साधनों के साथ मातृभूमि की सीमाओं की रक्षा करना है, जो उनके आदर्श वाक्य '**सुरक्षा**', '**स्वालंबन**' और '**एकता**' को चरितार्थ करता है।

4. मुझे खुशी है कि इन्हीं आदर्शों के साथ '**सीमांत चेतना मंच, पूर्वोत्तर**' भी पूर्वोत्तर भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को बढ़ावा देने के लिए समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ काम कर रहा है। संगठन मुख्य रूप से पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र के अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्रों के लोगों के साथ राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया के लिए प्रतिबद्ध है।

5. मित्रो,

सीमा सुरक्षा हर देश के लिए सबसे संवेदनशील मुद्दा है। हालांकि, आम तौर पर लोगों की धारणा यह है कि सीमा केवल बीएसएफ और सेना की जिम्मेदारी है। ऐसा नहीं है। हमें यह समझना चाहिए कि अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर रहने वाले नागरिक, हमारे अपने भाई-बहन हमारी रक्षा की पहली पंक्ति हैं।

6. सीमांत चेतना मंच इस बात को भली-भांति समझता है। इसलिए संगठन हमारे देश के अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्रों को सुरक्षित और संरक्षित रखने के लिए सीमा क्षेत्रों के नागरिकों के सशक्तिकरण के लिए काम करता है। उनके बीच शांति, सौहार्द और समन्वय के लिए प्रोत्साहित करता है। इसके अलावा उन्हें राष्ट्र निर्माण में योगदान के लिए प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

7. राष्ट्र के विकास में योगदान देने के लिए लोगों को **स्वस्थ्य, सशक्त** और **सक्षम** बनाना आवश्यक है, क्योंकि **व्यक्ति निर्माण से ही राष्ट्र निर्माण** संभव है।

इस दृष्टिकोण के साथ संगठन सीमा क्षेत्रों के युवाओं को शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

मुझे बताया गया है कि संगठन सीमा सुरक्षा बल (BSF) और सशस्त्र सीमा बल (SSB) के जावानों के साथ मिलकर असम के 9 सीमावर्ती जिलों में युवाओं के लिए भर्ती रैली और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। इसके लिए मैं संगठन का हार्दिक से आभार व्यक्त करता हूं।

8. मुझे खुशी है कि सीमांत चेतना मंच पूर्वोत्तर बैठकें, प्रदर्शनियाँ, सेमिनार, प्रशिक्षण आदि विभिन्न माध्यमों से पूर्वोत्तर के अंतर्राष्ट्रीय सीमा क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर देशभक्ति को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहा है।

9. मुझे बताया गया है कि सीमांत चेतना मंच पूर्वोत्तर अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्रों के ग्रामीणों के बीच राष्ट्रवाद और देशभक्ति का भावनात्मक जुड़ाव पैदा करने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित करता है। वे रामनवमी, रक्षा बंधन, भारत माता पूजन जैसे कार्यक्रम का आयोजन करता है।

10. भाई-बहनों के पवित्र त्योहार रक्षा बन्धन के अवसर पर संगठन हमारे देश की रक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर अपने परिवारों से दूर तैनात सैनिकों के हाथों पर "राखी" बांधकर इस त्योहार को मनाता है। यह कार्यक्रम न केवल हमारी परंपरा को बढ़ावा देता है, बल्कि हमारे सैनिकों को भी विश्वास दिलाता है कि देश उनके साथ है।

11. मुझे यह भी बताया गया कि संस्था द्वारा **"सरहद को स्वरांजलि"** नामक एक अद्वितीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। निश्चय ही यह कार्यक्रम सीमावर्ती क्षेत्रों के ग्रामीणों को देश की सीमा की सुरक्षा और संरक्षण के लिए प्रेरित करता है।

12. इस कड़ी में संगठन का **सीमा दर्शन यात्रा** कार्यक्रम भी प्रशंसनीय है, जिसके अंतर्गत हर वर्ष असम के विद्यार्थियों को देश के सीमा क्षेत्रों का भ्रमण और विभिन्न युद्ध स्मारकों के दर्शन कराए जाते हैं। ऐसे कार्यक्रम हमारी युवा पीढ़ी के बीच देशभक्ति, कर्तव्य के प्रति समर्पण और साहस और बलिदान के मूल्यों को विकसित करते हैं।

13. शैक्षिक मोर्चे पर भी सीमांत चेतना मंच पूर्वोत्तर सीमावर्ती क्षेत्रों के गरीब छात्रों को नि:शुल्क नोटबुक, कंप्यूटर, डेस्क, बेंच आदि की व्यवस्था करके मदद कर रहा है।

इसके अलावा, संगठन के वार्षिक कार्यक्रमों में एक कार्यक्रम जो मुझे सबसे अधिक आकृष्ट करती है, वह है सीमांत क्रीड़ा महोत्सव है। इस महोत्सव में भारी संख्या में राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों के युवाओं को अपनी खेल प्रतिभा और कौशल दिखाने का अवसर मिलता है।

14. वास्तव में यह सराहनीय है कि सीमांत चेतना मंच, इतनी बड़ी संख्या में सीमा क्षेत्रों के युवाओं को खेल के प्रति आकर्षित करने और उन्हें अनुशासित करने का काम कर रहा है। ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से मंच न केवल सीमा क्षेत्रों में खेलों को बढ़ावा देना का काम कर रहा है, बल्कि प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें प्रोत्साहित करने का प्रशंसनीय कार्य कर रहा है।

15. मित्रो,

मानननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारत को आजादी के 100वें वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने विकसित भारत के अभियान में युवाओं को जोड़ने और उनका मार्गदर्शन करने का आह्वान किया, क्योंकि हमारे देश का भविष्य हैं। आने वाले समय भारत को विकास के उच्च शिखर पर पहुंचाने में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

ऐसे में देश के हर वर्ग, हर क्षेत्र के युवाओं को शिक्षित, सामार्थ्य और कार्य कुशल बनाना होगा ताकि वे राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकें। हमें ईमानदारी और परिश्रम से भी युवाओं का पोषण करना होगा ताकि वे भविष्य में एक अच्छा नागिरक बनें।

इसके साथ ही हमें युवाओं के चरित्र निर्माण, उनमें नैतिक मूल्यों, देशभक्ति और आत्मविश्वास की मजबूत भावना को जागृत करना होगा।

स्वामी विवेकानन्द ने एक ऐसी पीढ़ी की कल्पना की थी, जो निडर, निस्वार्थ और मानवता की सेवा के लिए प्रतिबद्ध होगी।

16. लेकिन आज के परिवेश में हमारी युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति, मूल्यों और संस्कारों से दूर होकर पाश्चात्य संस्कृति से अधिक प्रभावित हो रहे हैं। आजकल के अधिकांश युवा सोशल मीडिया और नशीले व मादक पदार्थों के प्रभाव में आकर अपना समय, चरित्र और शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य खो रहे हैं। यह बड़ी चिंता का विषय है।

17. मैं समझता हूं कि हमारे युवाओं को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों और प्रौद्योगिकी का समझदारी से सकारात्मक उपयोग करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। मुझे विश्वास है कि दिशा में भी संगठन सक्रिय से काम करेगा।

18. मैं युवाओं से अपील करता हूं कि वे ईमानदारी और गंभीरता से अपने भविष्य को आकार देने की दिशा देने में काम करें। आप खुद को कुशल और परिपक्व बनाएं ताकि अपने समाज, राज्य और देश के विकास में योगदान दे सकें।

19. मुझे खुशी है कि आज इस शुभ अवसर पर, सीमांत चेतना मंच पूर्वोत्तर, असम राज्य समिति ने अपनी वार्षिक स्मारिका **"सीमांत'24"** जारी की है। मुझे विश्वास है कि इस स्मारिका को हर किसी की सराहनीय मिलेगी।

20. अतं में मैं लोगों के बीच देशभक्ति की भावना बढ़ाने और राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बढ़ावा देने के लिए सीमांत चेतना मंच पूर्वोत्तर की सराहना करता हूं।

मैं आशा करता हूं कि संगठन आने वाले दिनों में भी नागरिकों को हमारे देश की सेवा के लिए प्रेरित करने का अपना प्रयास जारी रखेगा। मैं इस दो दिवसीय राज्य सम्मेलन की सफलता तथा संगठन के भविष्य के कार्यों के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद।

जय हिंद।